राष्ट्रीय कार्यक्रमों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिला मास्टर ट्रेनरों की सहभागिता क्यों नहीं ?

देशभर में राष्ट्रीय कार्यक्रम जनगणना का कार्य आरंभ होने जा रहा है। निर्वाचन की तरह ही जनगणना के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर मास्टर ट्रेनरों को तैयार किया जाता है। किंतु इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिला कर्मचारियों की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी कम दिखाई देती है, और कई स्थानों पर तो उनकी उपस्थिति बिल्कुल भी नहीं होती। यह स्थिति न केवल चिंताजनक है, बल्कि सरकार के उस संकल्प को भी कमजोर करती है जिसमें महिलाओं को हर क्षेत्र में समान भागीदारी देने की बात बार-बार कही जाती है। अक्सर देखा गया है कि चुनाव, जनगणना या अन्य राज्य स्तरीय कार्यक्रमों के मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण में महिलाओं की भागीदारी बेहद सीमित रहती है। जबकि जमीनी स्तर पर स्थिति इसके विपरीत है–मैदानी कार्यों में महिला कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी होती है और वे अपने दायित्वों का निर्वहन भी दक्षता और जिम्मेदारी के साथ करती हैं। इसके बावजूद प्रशिक्षण जैसे महत्वपूर्ण चरण में उनकी उपेक्षा समझ से परे है। जब देश में महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं, तो राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी उन्हें समान अवसर मिलना चाहिए। यदि महिला मास्टर ट्रेनरों की नियुक्ति राज्य से लेकर ब्लॉक स्तर तक सुनिश्चित की जाए, तो इससे मैदानी महिला कर्मचारियों को अपनी समस्याएं खुलकर रखने का अवसर मिलेगा। वे अपनी महिला प्रशिक्षकों के साथ अधिक सहज होकर संवाद कर सकेंगी, जिससे प्रशिक्षण की गुणवत्ता भी बेहतर होगी। यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करते समय विभागीय अधिकारी महिला मास्टर ट्रेनरों की पर्याप्त भागीदारी सुनिश्चित करें। इससे न केवल महिला कर्मचारियों की समस्याओं को बेहतर तरीके से समझा जा सकेगा, बल्कि सरकार के महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य को भी वास्तविक रूप में आगे बढ़ाया जा सकेगा।

अरविंद रावल
गोपाल कॉलोनी, झाबुआ (म.प्र.)
मोबाइल: 9340579251

सन्नी माली बने भारतीय पत्रकार संघ के धार जिला संयोजक

इंफराज कुरैशी, कुक्षी। भारतीय पत्रकार संघ मध्यप्रदेश द्वारा पत्रकारिता क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने वाले सन्नी माली माली को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपते हुए जिला संयोजक, धार पद पर नियुक्त किया गया है। संगठन द्वारा जारी नियुक्ति पत्र दिनांक 11 अप्रैल 2026 के अनुसार यह निर्णय उनके दीर्घकालीन अनुभव, सक्रियता एवं पत्रकार हितों के प्रति प्रतिबद्धता को देखते हुए लिया गया है।नियुक्ति पत्र में उल्लेख किया गया है कि सन्नी माली को संगठन के विस्तार, पत्रकारों के हितों की रक्षा, समस्याओं के समाधान तथा संगठन की नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। साथ ही उनसे अपेक्षा की गई है कि वे संगठन को मजबूत बनाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

आपदा प्रतिरक्षण कार्यक्रम के आयोजन में 60 प्रतिभागियों ने लिया प्रशिक्षण

कुक्षी। जन अभियान परिषद कुक्षी विकासखंड द्वारा आपदा प्रबंधन एवं प्रतिरक्षण हेतु 9 अप्रैल 2026 को ग्राम पंचायत ढोलिया के रायपुरिया स्थित ईश्वर महादेव मंदिर परिसर में आपदा प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुल 60 प्रतिभागियों (महिला 5 एवं पुरुष 55) ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 9 बजे हुआ, जिसमें जन अभियान परिषद के ब्लॉक समन्वयक श्री मनीष शर्मा, ग्राम पंचायत प्रतिनिधि सचिन रमेश, सहायक सचिव, पेसा एक्ट मोबिलाइजर हेमलता बघेल, प्रस्फुटन समिति सदस्य उमंग बघेल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खंड सहकार्यवाह अशोक बामनिया, सामाजिक कार्यकर्ता हरिओम अलावा सहित अनेक मेंटर्स एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे। प्रशिक्षण तीन सत्रों में आयोजित किया गया। प्रथम सत्र में पीआरए पद्धति के माध्यम से ग्राम का नक्शा तैयार कर प्रमुख स्थानों जैसे मार्ग, मंदिर, विद्यालय, तालाब, बाजार, बावड़ियां एवं प्राचीन भवनों की जानकारी साझा की गई। साथ ही नर्मदा की सहायक हथनी नदी से संभावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का चिन्हांकन किया गया। इस दौरान ग्राम में 99 से अधिक प्राचीन बावड़ियों की जानकारी भी सामने आई। द्वितीय सत्र में मेंटर राजेंद्र सस्तिया द्वारा आपदा प्रबंधन पर विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने चक्रवात, भूस्खलन, सुनामी, महामारी, सूखा, बाढ़, लू-लहर, शीत लहर, जंगल की आग, बिजली तड़ित एवं रासायनिक खतरों जैसी आपदाओं के बारे में जानकारी दी। साथ ही आपदा से पूर्व की तैयारियों, आपातकालीन किट, सुरक्षित स्थानों की पहचान एवं सामूहिक प्रयासों की महत्ता पर प्रकाश डाला। कोरोना काल का उदाहरण देते हुए समाज की एकजुटता को आपदा से निपटने का सबसे प्रभावी माध्यम बताया। समापन सत्र में ब्लॉक समन्वयक श्री मनीष शर्मा ने कहा कि आपदाओं से बचाव के लिए हमें अपनी पारंपरिक जीवनशैली, खान-पान और पर्यावरण संरक्षण की ओर लौटना होगा। उन्होंने ग्राम में मौजूद प्राचीन बावड़ियों के पुनर्जीवन एवं हथनी नदी के किनारे फलदार पौधारोपण पर जोर दिया, जिससे जल संकट एवं बाढ़ जैसी समस्याओं से बचाव संभव हो सके। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को आपदा से निपटने हेतु जागरूक रहने का संकल्प दिलाया गया। इसके पश्चात चाय एवं अल्पाहार की व्यवस्था कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

प्रकृति, पराक्रम और प्रेम की वादी: माण्डू

डॉ. रामा तक्षक

हवाओं का था पहरा, था सावन का घोर अँधेरा,
चिंगारी उठी हिय में, लिए प्रेम की लौ का सेहरा।

कुछ बरस पहले जब मैं अजन्ता से चलकर माण्डू की वादी में और खासकर जब माण्डू किले में रानी रूपमति महल पहुँचा था तब अनायास ये पँक्तियाँ होटों पर फड़फड़ाई थी। ये पँक्तियाँ लैला मजनू, हीर रांझा, रानी रूपमति और बाज बहादुर की लम्बी पँक्ति के युगान्तर की कहानी कहने में सक्षम हैं। धरती पर जब भी प्रेम घटता है तब अपनी एक अजूबी पहचान खड़ी कर देता है। यह अजूबापन इसलिए है कि समाज की धार्मिकता ने मानव जीवन को नीरस बना दिया है। दीवारें खड़ी कर दी हैं। इस नीरस वातावरण में जब प्रेम घटता है तो एक क्रान्ति सी घटती है। प्रेम इन दीवारों को तोड़, अपने आपको अस्तित्व के साथ जोड़ लेता है। यूँ कहूँ तो अतिशयोक्ति न होगी कि अस्तित्व का ईंट पत्थर और चूना प्रेम ही है। प्रेम से ही अस्तित्व की अनुभूति सम्भव है। प्रेम और अस्तित्व दो नहीं हैं।

जनश्रुतियों की मानें तो माण्डू महाभारत व रामायण के काल से ही जाना जाता रहा है। उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी के आधार पर माण्डू का नियमित इतिहास कागज के पन्नों में मध्य काल से ही माना जाता है। 612 विक्रम संवत के एक शिलालेख के अनुसार, छठी सदी में माण्डू बहुत ही फलता फूलता नगर हुआ करता था। इसके अतिरिक्त धार जिले के पुराने तिलकपुर में मिले एक शिलालेख में उपलब्ध जानकारी की माने तो चंद्रसिंह नाम के व्यापारी ने ष्मंडाप दुर्गष् में स्थित पार्श्वनाथ मंदिर में, एक मूर्ति की स्थापना की थी। कालान्तर में ष्मण्डूष् शब्द मण्डपा दुर्गा का ही बदला हुआ नाम है।

माण्डू, धार जिले के माण्डव क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन शहर है। यह भारत के पश्चिमी मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित है। यह 11 वीं शताब्दी में, माण्डू तारागंगा या तरंगा राज्य का उपभाग रहा था। माण्डू का सबसे पहला संदर्भ 555 ईस्वी के संस्कृत शिलालेख में भी मिलता है। जिसके अनुसार माण्डू 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में भी एक दुर्ग वाला शहर था। जिसे 10 वीं व 11 वीं शताब्दी में परमार वंश काल में ख्याति मिली। इस स्थान को माण्डू व माण्डवगढ़ भी कहा जाता था।

कन्नौज के प्रतिहार वंश के नरेशों के समय में, परमार वंशीय श्री सरमन मालवा को इस क्षेत्र का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। तत्समय भी माण्डवगढ़ बहुत सम्पन्न नगरी था। इतिहासकारों के अनुसार प्रतिहारों के पतन के बाद परमार वंश ने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया था। परमार वंशी शासन काल में राजा मुंज व राजा भोज जैसे प्रसिद्ध नरेश हुए।

12वीं, 13वीं सदी में माण्डू शासन की डोर जैन मंत्रियों के हाथ में रही। यह काल माण्डू का स्वर्णिम काल बताया जाता है। इस काल में मांडवगढ की जनसंख्या लाखों में थी। इस काल में यहाँ हिन्दू मन्दिरों के अतिरिक्त लगभग 300 जैन मन्दिर भी थे। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यहाँ का जीवन सम्पन्न था। किन्तु 1305 में माण्डू पर, अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति आइरन-उलमुल्क ने आक्रमण कर, परमार वंश से नियंत्रण छीन लिया था। इस युद्ध के दौरान काफी बड़े स्तर पर कत्लेआम हुआ। इस तरह हिन्दू राज का माण्डू में सूर्यास्त हो गया।

इस तरह लगभग 100 वर्ष तक मांडू पर तुगलक वंश का शासन रहा। इसके बाद 1401 में दिल्ली के तुगलकों से माण्डू स्वतंत्र हो गया और मालवा के शासक दिलावर खाँ ने माण्डू पर कब्जा कर लिया। 1405 में दिलावर खान के पुत्र होशंगशाह ने अपनी राजधानी धार से बदलकर, माण्डू को बना लिया। माण्डू के किले का निर्माण भी इसी ने करवाया था। इस प्रकार, माण्डू पर पठान शासकों का शासन प्रारम्भ हुआ। इन पठान सुल्तानों ने माण्डू में सुन्दर इमारतों और प्रसादों का निर्माण करवाया। जो कि आज भी पर्यटन के विशेष आकर्षण के केंद्र बने हुए हैं। होशंगशाह के पुत्र मोहम्मद ने बहुत ही अल्पकाल, एक वर्ष, तक शासन किया। उन्हें, मोहम्मद खिलजी ने जो कि अति सैन्यवादी विचारधारा के पोषक थे, जहर देकर मरवा दिया था। इसी के साथ माण्डू में खिलजी शासन की स्थापना हुई। मोहम्मद खिलजी के उत्तराधिकारी गयास-उद-दीन ने अगले 31 वर्षों तक शासन किया। गयासुद्दीन ऐय्याशी शासक था। उसका सारा समय स्त्रियों के साथ संगीत सुनने में बीतता था। उसके हरम में हजारों संख्या में स्त्रियाँ थी। उसी ने जहाज महल का निर्माण करवाया था। अस्सी बरस की उम्र में उसके पुत्र नासिर-उद-दीन ने उसे जहर देकर मरवा दिया था।

1531 ई. में गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने माण्डू पर आक्रमण कर कब्जा जमा लिया था। किन्तु तीन वर्ष बाद ही 1534 ई. में हुमायूँ ने माण्डू की चढ़ाई की और यहाँ पर अपना आधिपत्य जमा लिया। माण्डू की सत्ता ने 1554 में एकबार फिर पलटा खाया। इस बार माण्डू बाजबहादुर के शासनाधीन हुआ।

इसी काल में रानी रूपमती - बाज बहादुर के जीवन की प्रेमलता पोषित हुई और फली बढ़ी। कहा जाता है कि रानी रूपमती हिन्दु गायिका थी। बाज बहादुर रूपमती का गायन सुनकर, उस पर पर मुग्ध हो गये थे। उनके प्रेम के परवान के बारे में कहा जाता है कि बाज बहादुर अपने महल से हर दिन रानी रूपमति को देखे बिना चौन नहीं लेते थे। उधर रानी रूपमति को बाज बहादुर से प्रेम तो था ही साथ ही निमर के मैदानों में बहती नर्मदा नदी के प्रति भी बहुत श्रद्धा थी। यहाँ तक कि रानी रूपमती नर्मदा नदी के दर्शन के उपरान्त ही भोजन ग्रहण करती थी। इसलिए बाज बहादुर ने नर्मदा के किनारे रानी रूपमती महल का निर्माण करवाया था। आज भी रानी रूपमति महल में यदि आप प्रेम से पुकारें तो इस पुकार की प्रतिध्वनि आपके मन में बस जायेगी।

कहते हैं 1561 में, अधम खान और पीर मुहम्मद खान के नेतृत्व में अकबर की सेना ने मालवा पर हमला किया। जिन्होंने 29 मार्च 1561 को सारंगपुर की लड़ाई में बाज बहादुर को हरा दिया। अदहम खान के हमले का एक कारण रानी रूपमती से उनका प्रेम प्रतीत होता है। माण्डू के पतन की खबर सुनकर रानी रूपमती ने जहर खाकर प्राण त्याग दिये। इसके आगे माण्डू के इतिहास में 1729 की माण्डू की लड़ाई भी अपना महत्वइ पूर्ण स्थान रखती है। जयपुर के सवाई राजा जय सिंह को अक्टूबर 1729 में मालवा की सुबेदारी मिली। उन्हें मराठों के खिलाफ युद्ध करने का आदेश दिया गया। इस युद्ध में कछवाहों ने मराठों के खिलाफ बहुत साहस दिखाया। भरतपुर के राजा सूरज मल के नेतृत्व में, मराठों के खिलाफ, जाटों ने इस युद्ध में सवाई जयसिंह का साथ दिया। अन्ततरू मराठों की इस युद्ध में चुरी तरह हार हुई। इस युद्ध के जीतने पर माण्डू सवाई जय सिंह के अधीन आ गया।

रानी रूपमति महल में बना मण्डप एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है और कई रमणीक दृश्य प्रस्तुत करता है। इनके अलावा नहर झरोखा, बाज बहादुर महल, और नीलकंठ महल भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

रानी रूपमती राजस्थान की एक हाड़ा राजकुमारी थी। जो धरमपुरी में रहती थीं। कहा जाता है कि उनका बचपन में ही विवाह हो गया था।

माण्डू रानी रूपमति और बाज बहादुर की प्रेम कहानी को सुरम्य वादियों की हवा में संजोए है। माण्डू निश्चित ही कश्मीर की वादियों की याद दिलाता है। यह स्थान हरी-भरी वादियों व नर्मदा का सुरम्य तट के साथ अत्यंत रमणीय जगह है। इसे मालवा का स्वर्ग कहना भी अतिशयोक्ति न होगा। आज यह एक पर्यटक स्थल के रूप मे प्रसिद्ध है। जो कि इन्दौर शहर से 100 किमी की दूरी पर तथा धार से केवल 35 किलोमीटर की दूरी पर है। माण्डू समुद्रतल से 633 मीटर (2079 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है। यह शहर, विंध्य पर्वत की तलहटी में 13 किमी (8.1 मील) पर फैला हुआ है। इसके उत्तर में मालवा का पठार और दक्षिण में नर्मदा नदी की घाटी है।

तेरहवीं सदी में मालवा के सुलतानों ने इसका नाम शादियाबाद यानि ष्खुशियों का शहरष् रख दिया था। वास्तव में यह नाम इस जगह को सार्थक करता है। यहाँ के दर्शनीय स्थलों में जहाज महल, हिन्डोला महल, शाही हमाम और आकर्षक नक्काशीदार गुम्बद वास्तुकला के उत्कृष्टतम रूप हैं।

माण्डू में जाने के लिए बारह दरवाजे हैं। इसका मुख्य रास्ता दिल्ली दरवाजा कहलाता है। अन्य दरवाजे रामगोपाल दरवाजा, जहांगीर दरवाजा और तारापुर दरवाजा कहलाते हैं। सैलानी इस प्रेमनगरी को देखने नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी माह में सबसे अधिक संख्या में इस पर्यटन स्थल पर, यहाँ के दर्शनीय स्थलों जैसे जहाज महल, हिन्डोला महल, शाही हमाम और वास्तुकला के उत्कृष्टतम उदाहरण आकर्षक नक्काशीदार गुम्बद को देखने पहुंचते हैं। हर वर्ष माण्डू में मध्य प्रदेश प्रशासन द्वारा माण्डू उत्सव का आयोजन भी किया जाता है। यदि आप भी हनीमून, नववर्ष या सर्दियों की छुट्टियाँ बिताने कहीं जाना चाहते हैं तो माण्डू का मनोरम दृश्य आपके स्वागत में बाट निहार रहा है।

माण्डू के पराक्रमी इतिहास, रानी रूपमति बाजबहादुर की प्रेम कहानी और नर्मदा के निर्मल प्रवाह की छटा को देखकर अपनी दो पंक्तियाँ आपके साथ साझा कर रहा हूँ।

प्रेम की यहाँ बिसात बिछी है,
पराक्रम की देहरी पे आना,
नर्मदा सींचती है तल हरदिन, ग़र
है जीवन को सजाना।

बुरहानपुर में जोन स्तरीय निरंकारी, महिला संत समागम का भव्य आयोजन

बुरहानपुर। संत निरंकारी मिशन द्वारा आयोजित जोन स्तरीय महिला संत समागम का भव्य आयोजन 12अप्रैल को स्थानीय सिंधी बस्ती स्थित धर्मशाला के पास वाले ग्राउंड में दोपहर 12 से 3:00 बजे तक हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन का उद्देश्य महिलाओं को आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए उनमें प्रेमए करुणाए सहनशीलता और आत्मविश्वास जैसे मानवीय मूल्यों को जाग्रत करना है। समागम की अध्यक्षता नईदिल्ली से पधारी आदरणीय बहन डॉ प्रवीण खुल्लर जी; मेंबर इंचार्ज एप्रचार प्रसार ने की। उन्होंने अपने प्रेरणादायक विचारों में कहा कि राम बुलवा भेजिया एदिया कबीरा रोएए जो सुख साधु संग में सो वैकुंठ में न हो, मानव जीवन जिसके लिए देवी देवता भी तरसते हैए मानव जीवन एक अनमोल अवसर है जिसमें ईश्वर की प्राप्ति की जा सकती है इसलिएए श्वासो के रहते ईश्वर की पहचान कर उनसे जुड़ना जरूरी हैाये ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है। जिसकी पहचान ब्रह्मज्ञान द्वारा संभव है। और हर प्राणियों में इसी का वास हैएइसलिए सभी का सम्मान, उनसे प्यार और मिलवर्तन वाले भाव से जीवन व्यापन करना चाहिए। सभी धर्म के भेद , ऊंचनीच के भेद को त्याग कर ,एक ईश्वर की संतान है उसी रूप में देखना चाहिए। हर सफल व्यक्ति के पीछे एक महिला होती है। परिवार से एक नारी जब आध्यात्म से जुड़ती है तो ,उसके माध्यम से पूरा परिवार जुड़ता है। स्वर्ग का नक्शा बन जाता जिस घर भी बस जावे नाम क्योंकि फिर परिवार के सभी सदस्यों में ईश्वर दिखाई देता है। क्योंकि स्त्री ही परिवार की नींव है। इनके माध्यम से पूरे परिवार में जागरूकता आती है, प्रेम मिलवर्तन आदि समस्त मानवीय गुण परिवार मेंआते है। दुनिया की गृहस्थी के सारे काम करते हुएए सुंदर रिश्ते प्यार से निभाते हुएए कमल की तरह खिले रहना है। इस महिला समागम में बुरहानपुर सहित खंडवा, इंदौर, पीथमपुर,नंदबाग,मह, खरगोन, भटियान, गंगनाव, बसीपीपरी, सागीरकुटी, शीतलनगर, निंबोला और जैनाबाद ,लोधीपुरा ,रावेर आदि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों से भारी संख्या में श्रद्धालु महिलाएं एवं बहनें सम्मिलित हुईं। यह आयोजन इंदौर के जोनल इंचार्ज आदरणीय श्री उदयवीर सिंह तथा सेवादल के क्षेत्रीय संचालक मुरलीधर लालवानी जी बुरहानपुर के मुखी चन्द्रलाल लालवानी जी के कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआए इन्होंने सभी सेवादारों एवं प्रशासन के सकारात्मक सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद प्रकट किया।

नगर की पहली जनजाति समाज की बेटी डॉ रीना बघेल बनी डॉक्टर, कुक्षी का बढ़ाया गौरव

इंफराज कुरैशी, कुक्षी। नगर के लिए गर्व का क्षण तब आया जब जनजाति समाज की बेटी डॉ रीना बघेल ने डॉक्टर बनकर इतिहास रच दिया। सीमित संसाधनों और अनेक चुनौतियों के बावजूद रीना ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प के बल पर यह मुकाम हासिल किया। डॉ रीना बघेल की इस उपलब्धि से न केवल उनके परिवार, बल्कि पूरे जनजाति समाज और नगर कुक्षी का नाम रोशन हुआ है। उनकी सफलता से क्षेत्र की अन्य बेटियों को भी शिक्षा के प्रति प्रेरणा मिलेगी और वे भी अपने सपनों को साकार करने का हौसला जुटा सकेंगी। डॉ रीना बघेल के पिता लक्ष्मण बघेल भारतीय जनता पार्टी से नगर परिषद कुक्षी के वार्ड क्रमांक10 से पूर्व पार्षद रहे हैं वहीं माताश्री श्रीमती रंगूबाई वर्तमान में वार्ड नं 9 से भाजपा की पार्षद हैं डॉ बघेल बचपन से ही मेधावी छात्रा रही उन्होंने पहले ही प्रयास में पात्रता परीक्षा पास कर एमबीबीएस में दाखिला दिया और एमबीबीएस की डिग्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय मेडिकल कॉलेज से प्राप्त की हैपरिजनों और नगरवासियों ने डॉ रीना की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। समाज के लोगों ने इसे एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक उदाहरण है। डॉ रीना बघेल ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, गुरुजनों और निरंतर मेहनत को दिया। उनका कहना है कि अगर लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत सच्ची हो, तो कोई भी मंजिल दूर नहीं होती।

महेश्वर में बनेगा भव्य 'अहिल्या लोक', नर्मदा तट पर 110 करोड़ की परियोजना को मिली रफ्तार

महेश्वर। (इंदौर समाचार सुनिल गाडवे)।

मध्य प्रदेश शासन द्वारा नगर को देश के प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया जा रहा है। नर्मदा तट स्थित ज्वालेश्वर मंदिर क्षेत्र में प्रस्तावित 'अहिल्या लोक' परियोजना को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं। करीब 110 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत 15 एकड़ भूमि पर धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन सुविधाओं का समग्र विकास किया जाएगा। मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा निर्माण कार्य के लिए लगभग 36 करोड़ 94 लाख रुपए के टेंडर जारी किए जा चुके हैं। इस कार्य में भवन निर्माण के साथ-साथ बाहरी विद्युतीकरण, एयर कंडीशनिंग, लैंडस्केपिंग और फायर फाइटिंग जैसी आधुनिक व्यवस्थाएं शामिल होंगी। परियोजना को 22 माह में पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। परियोजना के भूमिपूजन को लेकर भी हलचल तेज है। संभावना जताई जा रही है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्वयं महेश्वर पहुंचकर इस कार्य का शुभारंभ कर सकते हैं। हालांकि अभी आधिकारिक कार्यक्रम घोषित नहीं हुआ है, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर संभावित दौरे को ध्यान में रखते हुए तैयारियां शुरू हो गई हैं।यदि दौरा तय होता है, तो धामनोद रोड स्थित नवीन शासकीय संदीपनी विद्यालय भवन का लोकार्पण भी किया जा सकता है।अहिल्या लोक परियोजना को तीन चरणों में विकसित किया जाएगा। पहले चरण में लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के जीवन और उनके योगदान को प्रदर्शित किया जाएगा, जिससे आने वाले श्रद्धालु और पर्यटक उनके आदर्शों से प्रेरणा ले सकें। इस परियोजना के तहत ज्वालेश्वर और कालेश्वर महादेव मंदिरों के बीच कनेक्टिविटी को भी बेहतर बनाया जाएगा। प्रस्तावित झूला पुल के निर्माण से श्रद्धालुओं के लिए आवागमन आसान होगा। साथ ही, ओंकारेश्वर की तर्ज पर महेश्वर को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक पर्यटन के नक्शे पर स्थापित करने की दिशा में यह परियोजना मील का पत्थर साबित हो सकती है। सिंहस्थ से पहले इस परियोजना को पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है, जिससे देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिल सकें और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिल सके।